8.11.66 रात्री क्लास– यह स्थापना हो रही है।यह तो बच्चे जानते हैं।दुनियां में तो साधु–संत महात्मा भक्तिमार्ग के बहुत ही हैं।यहां तो विकारों के ही लिये मारा–मारी हो पड़ती है।इन गुरू लोगों को .....नहीं है।.....जगतगुरू एक निराकार बाप शिव है।शिव के सिवाय कोई हो नहीं सकता है।इस समय है ही पतित दुनियां।देहधारी मनुष्य किसकी भी सद्गति कर नहीं सकता है।शिवबाबा तो देहधारी है ही नहीं।समझाते हैं यह इनका शरीर है बहुत जन्मों के अंत का।मेरा नाम तो शिव ही है और सब आत्माओं को शरीर मिलता है।नाम भी शरीर पर रखा जाता है।मेरा नाम शरीर पर नहीं आत्मा पर है।मैं जब इसमें प्रवेश करता हूँ तो भी मेरा नाम शिव ही रहता है।मनुष्य कुछ भी नहीं समझते।पत्थरबुद्धि हैं।मनुष्य तो आत्मा को भ्झी नहीं जानते हैं।आत्म ज्ञान क्या देते हैं।आत्मा सो परमात्मा।फिर परमात्मा सो आत्मा यही ज्ञान फैला हुआ है।निराकार परमपिता परमात्मा के बिना कोई देहधारी ज्ञान दे नहीं सकता।यह तो ढेर गुरू हैं।सब भक्तिमार्ग की अंधश्रद्धा में।अभी उनको पकड़ना चाहिए।अक्लमंद बच्चा हो तो अखबार में भी डाल सकता है।जगत गुरू सर्व का सद्गति दाता पतित पावन तो निराकार परमात्मा ही है।देहधारी जगत गुरू जगत के सद्गति करता हो ही नहीं सकते।इशारा देना पड़े नही तो अंधों को लाठी कैसे मिले?मगर अब तक बच्चों में वो नशा कहां?अब तक तो 5आना भी मुश्किल समझे हैं।अभी तो ग्यारह आना बाकी ज्ञान पाना है।चलते2 फिसल जाते हैं।समझाने की शक्ति नहीं है।इसलिए मां–बाप बच्चों में प्रवेश करके मदद करते हैं।प्रदर्शनियों का उद्घाटन आदि करते हैं।बाप बच्चों का मददगार है।साधु–संत आदि आते हैं।लाखों रुपया कमाये जाते हैं।फिर भी पवित्र रहते हैं।इसलिए मान है।यह कोई समझते नहीं हैं कि यह जगत गुरू फिर भी यहां जन्म लेंगे।दुनियां में बहुत घोर अंधेरा है।बाप का परिचय नहीं है।उन्होंने गुरू समझ कितने आकर माथा झुकाते हैं।भीड़ लग जाती है चरणों में गिराने लिए।मिलता कुछ भी नहीं।यह बातें कोई नहीं जानते हैं।तुम्हारी बहुत मेहनत है।घर–बार में रहते पवित्र रह दिखाना यह हिम्मत कोई नहीं दिखलाते।बाबा बच्चों को बहुत मदद करते हैं।बच्चों को पता नहीं पड़ता है।मम्मा भी कितनी सर्विस कर रही है।जैसे बाबा वैसे मम्मा करती है।मम्मा को और ही जास्ती मर्तबा मिला;लेकिन मम्मा की याद में कई मुर्दे बन गये।मम्मा को तो उंच पद मिला तो खुश होना चाहिए।ओम